'व्यास विष्णुरूपाय': पूर्ण–स्वाधीनता का गृहस्थ–मार्ग

मोक्ष मनुष्य की पूर्ण स्वाधीनता क्यो है? – कथा रूप मे यह स्पष्ट है इस उपन्यास मे। राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, कार्मिक, मानसिक और हार्दिक स्वतंत्रताओ को भी उसी सागर–प्रवाह मे मिलाने वाली नदियें बन कर यह उपन्यास मानव जीवन जैसे बहु–आयामी विषय की सुन्दर, सुरम्य और सरल कहानी हो गया है। लेखक ने भारतीय दर्शन और अध्यात्म को अदभुत हृदयग्राही रूप दिया है। महामुनि व्यास जैसे ज्ञानियो के ज्ञानी, ज्ञान के पूर्ण आकाश को, एक कथा का नायक बना कर प्रस्तुत करना शायद सबसे कठिन कर्म है उपन्यास लिखने वाले के लिये। उसे अपने नायक को ईश्वर सदृश्य समझने वाले करोड़ो लोगो की भक्ति महानता–भय से आच्छादित किये रखती है। सहज उपन्यास का रूप देकर विचारो को भावना रूप मे कथा प्रवाह बना कर गूढ़ विषय को सहज अभ्यिक्ति देकर उपन्यास को आज के पाठको के लिये जीवन की अत्यन्त उपयोगी वस्तु बना दिया है।

'व्यास की ज्ञान–व्यथा और देवर्षि नारद', 'विपुल चेतना और अशान्त हृदय', 'व्यास की प्रेमपीर विरही की प्रेम पीर', 'इक्कीसवी शताब्दि और व्यास' मे केवलज्ञान के अतिरिक्त मोक्षप्राप्ति के अन्य मार्गो को कथा–प्रवाह का हिस्सा बना कर विपरीतो का उपयोग भी एक ही सत्य की सम्पूर्णता को उजागर करता है। यह वही कर सकता है जो जीवन से आत्मसात हो गया हो। परिच्छेद 'मोक्ष प्राप्ति के बाद' मे, पृष्ठ 362 से 365 मे, लेखक ने भारतीय अध्यात्मिक चिन्तन के उस मूक बिन्दु को शब्द दिये है जो भारत के केवलज्ञानियो ने अवश्य छेड़ा होगा और जिसके पृष्ठ लम्बी पराधीनता के अंधेरे मे खो गये।

महर्षि व्यास भारतीय दर्शन, धर्म और गृहस्थ जीवन के प्रकाशस्तम्भ हैं। इस उपन्यास मे उनका चिन्तन उन्हे मोक्षप्राप्ति के बाद देह–त्याग तक शेष बच रहे जीवन के सदुपयोग पर भी ले जाता है। प्रश्न बहुत उचित है – केवलज्ञानी आत्मा ऋणि है नश्वर मानव देह की, क्योकि यदि देह न हो तो आत्मा बिना मानव देह के मोक्ष नही प्राप्त कर सकती। यह कथन बार बार आया है भारतीय चिन्तन मे कि 'मानव देह सबसे उत्तम माध्यम है कैवल्य का'। ज्ञानियो ने यह भी कहा है कि देवताओ को भी मानवयोनि मे जन्म लेना पड़ता है मोक्ष प्राप्त करने के लिये।

उपन्यास 'व्यास विष्णुरूपाय' मे निर्मल ने इस चिन्तन को आगे बढ़ाया है – 'यदि नश्वर मानव देह इतनी महत्वपूर्ण है कैवल्य प्राप्ति के लिये तो क्या कैवल्य प्राप्त आत्मा का कर्तव्य नहीं है कि वह कैवल्य प्राप्ति के बाद, शेष बची आयु मे, मानव देह को निर्भय और सशक्त करने के लिये तप करे।

कैवल्य प्राप्त आत्मा मुक्त हो चुकी है कर्म बंधनो से। कैवल्य के अर्थ यही है कि अब यदि केवली–आत्मा अपने देशवासियो के लौकिक हित के लिये तप करे तो उसे कर्म–बंध नहीं हो सकता। यदि कैवल्यप्राप्त–आत्मा तप करे – कैवल्य प्राप्ति के बाद देह छोड़ने की अवधि तक – कि जिस देश के मानवो ने सहयोग किया उसका मोक्ष प्राप्ति मे, उनकी देह को अधिक बलवान बनाते उन दुर्जनो से जो केवली के मोक्ष जाने के बाद आक्रमण करने आये और दासता की बेड़ियो मे जकड़ कर उनके अहिंसक जीवन, धर्म और विश्वास की हत्या करते रहे शताब्दियो तक।

केवली की आत्मा मुक्त हो चुकी है। वह ईश्वर हो चुकी है। अब उसे शुभ कर्मो का बंध नही हो सकता। ईश्वर तो निरन्तर ही शुभकर्म करते रहते हैं। उन्हे कर्मबंध नही होता। शास्त्र कहते हैं कि भारत से असंख्य आत्माएं मोक्ष प्राप्त कर चुकी हैं। भारत देश के वासी गृहस्थो की देहपुष्टि की कामना, उनकी देहो की रोगो और दुष्टो के भय से मुक्ति की कामना, यदि केवली आत्माएं करती हैं तो उनकी यह कर्मबंधहीन कामना भारत को सदा स्वतंत्र देश बनाने मे सहायक होगी। भारतीयो की देह दुर्जनो से अधिक बलवान हो सकती है, यदि मोक्ष प्राप्ति के बाद आत्माएं शेष जीवन काल मे देह के आत्मा के प्रति उपकार के बदले देह का उपकार करें। मोक्ष प्राप्त आत्मा अपने तप के बल से अहिंसको की देह को निर्भय करे। अहिंसक देह को हिंसक देह से अधिक बलवान होने का वरदान दें।

नारी देह को असहाय बलात्कार का शिकार न होने दें। बलात्कार की संभावना होते ही नारी देह मे वह शक्ति आ जाय जो दुर्जनो को पराजित कर दे। देह जिसका उपयोग आत्मा ने किया मोक्षप्राप्ति के लिये निश्चिन्त होकर जी सके। इससे पृथ्वी पर शुभकर्म करने वाले गृहस्थो का पार्थिव जीवन भी सुखमय होगा और उनकी शुभ कर्मो मे श्रद्धा दृढ़ होगी। इससे किसी सज्जन की हानि होने की सम्भावना नही हो सकती। केवली आत्मा संसार मे छुटे अपने अनुयायियो का इतना उपकार बिना कर्मबंध के करे तो भारत अध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर होगा और सारे संसार की उन्नति मे सहायक होगा।

भारत के सभी धर्म मानते है कि गृहस्थ मार्ग से भी मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। किन्तु हमारे इतिहास मे कभी भी यह सामूहिक प्रयत्न नही किया गया कि गृहस्थ मार्ग से अधिक से अधिक लोग मोक्ष प्राप्त करे। यदि यह चिन्तन किया जाय तो भारत कदापि पराधीन नही हो सकता। भारत का अध्यात्मिक चिन्तन आधा ही सिद्ध हुआ। आधा सिद्ध होना शेष है।